पूर्णता

— नरेन्द्र कोहली

खंडवा के सिविल जज, माधवचंद्र बंद्योपाध्याय ने स्वामी के सम्मान में अपने घर पर एक भोज दिया। वहीं सारा बंगाली समाज जुट आया।

''स्वामी जी ! भोजन से पहले संगीत। धर्मचर्चा बाद में।'' लोगों ने शोर मचाया।

स्वामी हंसे, '' संगीत विषयक मेरे ज्ञान के संदर्भ में आप कुछ जानते भी नहीं हैं, फिर भी संगीत का आग्रह कर रहे हैं। ...और भोजन के पश्चात् आप अपने अपने घर जा कर विश्राम करना चाहेंगे, तो धर्मचर्चा कब होगी ?''

कोई कुछ नहीं बोला।

''ठीक है, पहले संगीत।'' स्वामी ने जैसे उनकी बात मान ली, ''धर्मचर्चा हो न हो।''

उपस्थित लोगों में उत्साह की लहर उठी, ''यह स्वामी काफी उदार और आधुनिक लगता है।''

स्पष्ट था, धर्मचर्चा के लिए वे लोग अधिक उत्सुक नहीं थे।

स्वामी ने गाया :

ऊं पूर्णमदः , पूर्णमिदम् , पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते।।

इन पंक्तियों को स्वामी ने घुमा फिरा कर अनेक बंदिशों में गाया। उनके स्वर का जादू स्पष्ट ही सबको बांध रहा था।

स्वामी मौन हुए, तो एक प्रकार की मर्मर ध्वनि उठी, जैसे लोग शिकायत कर रहे हों।

''क्या बात है — आप लोगों को मेरा गायन प्रीतिकर नहीं लगा ?'' स्वामी मुसकरा रहे थे।

''नहीं ! ऐसी बात नहीं है,स्वामी जी !'' हरिदास बोले, '' शब्द, स्वर और संगीत तो अद्‌भुत है। किंतु किसी को अर्थ समझ नहीं आया। आप शायद उपनिषद् से गा रहे हैं ; और उससे लोगों का परिचय नहीं है।''

''हां ! यह ईशावास्योपनिषद का पहला मंत्र है।'' स्वामी बोले, ''संगीत से तो आपका परिचय कोई भी करवा देगा ; किंतु उपनिषद् की चर्चा संन्यासी भी न करे, तो कौन करेगा हरि बाबू ?''

''बात तो ठीक है किंतु उपनिषद् समझ में भी तो आना चाहिए।''

''बहुत सरल अर्थ है।'' स्वामी बोले, '' ऋषि ने कहा है कि 'वह पूर्ण है। यह भी पूर्ण है। पूर्ण में से पूर्ण ही उत्पन्न होता है। और यदि पूर्ण में से पूर्ण को निकाल लें, तो भी पूर्ण ही शेष बचता है।' ''

''यह कविता है या पहेली ?'' प्यारीलाल गांगुली ने टिप्पणी की, ''हमारे धर्मग्रंथों में ऐसी ऊटपटांग बातें भरी पड़ी हैं, इसीलिए तो कोई उनको पढ़ता नहीं है।''

''सत्य कहा आपने। जिन मंत्रों को सहस्रों वर्षों से लोग अपने गले का हार बनाए हुए हैं, उनके विषय में आपका विचार है कि उनको कोई पढ़ता नहीं है — क्योंकि आपने उन्हें नहीं पढ़ा।'' स्वामी बोले।

''ऐसा ही मान लीजिए।''

''तो उपनिषद् का पहला प्रमाण तो आप ही हैं।'' स्वामी हंस पड़े, ''आप अपने आप को पूर्ण सृष्टि मानते हैं। आप नहीं पढ़ते तो कोई नहीं पढ़ता। अब आप से पूर्ण और कौन हो सकता है।''

एक जोरदार ठहाका पड़ा और प्यारीलाल गांगुली बाबू कुछ झेंप गए, ''अच्छा मान लिया कि लोग पढ़ते हैं, कंठस्थ करते हैं ; किंतु समझते भी हैं ? मुझे तो ऐसा कोई नहीं मिला।''

''हां ! आपको कोई नहीं मिला। आजतक कोई नहीं मिला। पर अब हम प्रयत्न करते हैं कि आज आपको कोई ऐसा मिल जाए, जो इसका अर्थ समझता हो और आपको भी समझा सकता हो।'' स्वामी का स्वर अत्यंत गंभीर हो गया, ''ध्यान दीजिए कि यह ऊटपटांग बात क्या है।''

''क्या है ?''

''इस मंत्र में 'वह' का तात्पर्य है ब्रह्म ! हम मानते हैं कि ब्रह्म पूर्ण है।'' स्वामी ने कहा, ''और 'यह' का अर्थ है — सृष्टि। हम मानते हैं कि सृष्टि भी अपने आप में पूर्ण है।''

''सृष्टि कहां से पूर्ण हो गई ?'' प्यारीलाल गांगुली के स्थान पर बोस बाबू ने मोर्चा संभाल लिया।

''सृष्टि से अभिप्राय है 'प्रकृति'।'' स्वामी बोले, '' आजके वैज्ञानिक, प्रकृति का अध्ययन कर उसके नियमों का आविष्कार कर रहे हैं और पाते हैं कि नेचर इज़ कंप्लीट इन इटसेल्फ।''

''नेचर की बात और है। नेचर इज़ कंप्लीट इन ऑल इट्स आस्पेक्ट्स।''

''हम 'नेचर' को ही संस्कृत और बांगला में 'प्रकृति' कहते हैं महाशय। 'मदर नेचर' अर्थात् 'जगदंबा' – मां दुर्गा।'' स्वामी बोले, '' ब्रह्म में से प्रकृति का जन्म हुआ है। पूर्ण में से पूर्ण का जन्म हुआ है।''

''क्या प्रमाण है ?'' बोस बाबू ही पुनः बोले।

स्वामी ने सामने ही बैठी, एक मां– बेटी की ओर संकेत किया, ''इन माता और पुत्री को जानते हैं आप ?''

''हां ! ये प्यारीलाल गांगुली बाबू की पत्नी और पुत्री हैं।''

''आपकी पत्नी पूर्ण स्त्री हैं या नहीं प्यारी बाबू ?''

''नहीं मानेंगे तो घर जाकर पिटेंगे।'' पीछे से एक स्वर आया।

''हां ! हां ! पूर्ण स्त्री हैं।'' प्यारीलाल गांगुली बाबू ने मान लिया, '' कोई भी जानता है कि वे विकलांग नहीं हैं।''

''उनसे इस पुत्री का जन्म हुआ। यह पूर्ण कन्या है या नहीं ?''

''है।''

''यही है पूर्ण से पूर्ण का जन्म होना।'' स्वामी बोले, '' गूलर से पूर्ण बरगद का जन्म होता है और बरगद से अनेक गूलरों का ; और वे सारे गूलर अपने आप में पूर्ण होते हैं तथा कितने ही पूर्ण वटवृक्ष उगा सकते हैं। कितने उदाहरण चाहिएं आपको ?''

''ये उदाहरण तो ठीक हैं।'' बोस बाबू बोले, '' किंतु गणित का विज्ञान इसको नहीं मानता। पूर्ण में से पूर्ण को निकाल लेंगे, तो शेष क्या बचेगा – अंडा ? दस में से दस को निकाल लेंगे तो शेष दस नहीं बचते, शून्य ही बचता है। ऐसा न होता ; और संसार आपके मंत्र जैसा होता तो हम दस रुपए जेब में डाल कर हाट करने जाते, दस रुपयों की मछली खरीदते और दस रुपए बचा कर घर ले आते, क्योंकि दस में से दस निकालने पर दस ही तो बचते। ...''

''ऐसा क्यों ?'' प्यारीलाल गांगुली बोले, '' मैं तो प्रति दिन सौ रुपए अपने पर्स में डालता। उसमें से सौ रुपए अपनी पत्नी को दे देता और फिर अपने पर्स में सौ ही रुपए बचे हुए पाता।''

''सरकार अपने सारे कर्मचारियों को वेतन दे देती और फिर उसके राजकोश में उतना ही धन बचा रहता।'' किसी और ने कहा, ''एकाऊंट्स और ऑडिट वाले झख मार रहे होते।''

''गणित तो अपने आप में पूर्ण विज्ञान है ; किंतु उसको अभी आप छोड़ दीजिए। जो मां संतान को जन्म देती है, वह क्या अपूर्ण हो जाती है ? वह आपको कहीं अधूरी लगने लगती है ? उसमें से कुछ कम हो जाता है ? अभाव का अनुभव होता है आपको ?'' स्वामी मुसकराए, ''संतान को जन्म देने के पश्चात् भी वह संपूर्ण है। आम की एक गुठली से एक वृक्ष जन्मता है और उसमें सैकड़ों– सहस्रों पूर्ण आम फलते हैं, जो उन गुठलियों से युक्त होते हैं, जो सहस्रों वृक्ष उगा सकती हैं, तो क्या वह वृक्ष कहीं से अपूर्ण हो जाता है ?''

''गणित की बात कीजिए महाशय ! गणित की।'' बोस बाबू बोले, ''कृषिशास्त्र को अभी रहने दीजिए।''

''चलिए गणित की ही बात करते हैं।'' स्वामी ने उनकी बात स्वीकार कर ली।

प्यारीलाल गांगुली का मुखड़ा खिल उठा था और हरिदास बाबू कुछ चिंतित हो उठे थे।

''आप दस में से दस घटाते हैं, तो शेष बचता है शून्य। दस में दस जोड़ते हैं तो परिणाम है – बीस।''

''ठीक।''

''गणितज्ञों से मेरा प्रश्न है कि पूर्ण क्या है – दस, या बीस या शून्य ?''

''अपना निर्णय दें जज महोदय !'' एक सज्जन ने कहा।

''दस या बीस तो गणित की दृष्टि से भी पूर्ण नहीं हैं।'' माधवचंद्र बनर्जी बोले, ''पूर्ण तो शून्य ही है।''

''तो शून्य में से शून्य को घटाइए और शून्य में शून्य को जोड़िए।'' स्वामी बोले, ''फल क्या है – शून्य ही तो।''

उपस्थित लोगों में एक मर्मर ध्वनि फैल गई, जैसे उनकी समझ में कोई चमत्कार हो गया हो।

''समुद्र में से मेघ उठते हैं और सारे संसार को सींच आते हैं किंतु समुद्र की पूर्णता मे कोई अंतर नहीं आता और उन मेघों का बरसाया हुआ सारा जल पुनः आ कर समुद्र में मिल जाता है और समुद्र एक से दो नहीं हो जाता – पूर्ण से कुछ अधिक नहीं हो जाता।''

''यह मंत्र तो हमारी समझ में आ गया है स्वामी जी !'' हरि बाबू बोले, ''क्यों जज साहब ?''

''हां ! यह तो स्पष्ट ही है।'' जज साहब बोले, ''इससे स्पष्ट और क्या होगा – पक्षी के अंडे में से भी पूर्ण पक्षी जन्मता है और अन्य जीव जंतुओं और वनस्पतियों की संतान भी अपने आप में पूर्ण ही नहीं होती, अपने जैसे पूर्ण जीव को जन्म देने में समर्थ होती है।''

''और पूर्ण में पूर्ण जोड़ें कैसे ?'' प्यारीलाल गांगुली पुनः अटक गए थे।

''मनुष्य हो, या कोई अन्य जीव–जंतु ; अथवा कोई वनस्पति – अपने क्षय के पश्चात् जब वह पंचभूतों में विभाजित हो जाती है और प्रकृति में जा मिलती है, तो भी प्रकृति पूर्ण ही रहती है, पूर्ण से कुछ अधिक नहीं हो जाती।'' स्वामी ने अपने सामने उपस्थित लोगों को देखा, ''एक मंत्र और सुनना चाहेंगे ?''

''हां ! स्वामी जी !'' जज साहब ने आग्रह किया।